Success & ABILITY

विकलांगों के प्रतिभा की दिशा में

जनवरी 2018

साइबथलॉन
एक तकनीकी प्रदर्शनी

बच्चों के खेल से जीवन के सबक

समावेशी साइकिलिंग :
मनाली से खारदुंग-ला

एबिलिटी फ़ैस्ट पर दोबारा एक नजर

संपादकीय नज़र

दोस्तों,

हमारे मेलबॉक्स और व्हाट्सएप “अलविदा 2017” और “स्वागत 2018” संदेशों से भरा होगा । डाकिया द्वारा आजकल कोई अभिवादन कार्ड बांटा नहीं जाता। मतलब यह है कि समय की रफ़्तार कही अधिक तेज़ बन गयी है। प्रौद्योगिकी की गति बुलेट की गति जैसी हो गयी है। पलक झपकने के समय में, कही आगे बढ़ जाती है । प्रौद्योगिकी ने हमे समय की गति से भी कही अधिक गति में आगे बढ़ने पर विवश कर दिया । क्या आप इसको समझ पा रहे हैं ? इसके बावजूद , हमें गति के साथ तालमेल रखना चाहिए, नहीं तो हम पीछे रह जायेंगे । तो यह रही , ‘सक्सेस ऐन्ड एबिलिटी’ का साइबर संस्करण जिसमे - अन्य दिलचस्प लेखों के साथ - “साइबथलॉन” पर आवरण कथा है । आगे से, ‘सक्सेस ऐन्ड एबिलिटी’ मुख्य रूप से अपने डिजिटल संस्करण में ऑनलाइन में उपलब्ध होगा, और तिमाही के बजाय, एक मासिक पत्रिका होगा । विकलांगता क्षेत्र और मुख्यधारा की दुनिया में इतना कुछ हो रहा है कि हम तिमाही प्रिंट पत्रिका की धीमी और स्थिर गति को जयार नहीं रख सकते । डिजिटल संस्करण, समय के साथ अधिक उपयुक्त और सुसंगत लगता है और उसको न केवल हमारी वेबसाइट से, बल्कि एफ.बी, डब्लू.ए आदि से पढ़ा जा सकता है | बेशक, हम आपको देश और विदेश से कई समाचार ले आएंगे, पर हमे आपकी सचेत भागीदारी की सख्त आवश्यकता है। हम चाहते हैं की आप विभिन्न प्रकार के लेख भेजें- साधारण और उल्लसित घटनाओं के बारे में , प्रवृत्ति सेटर्स और आइकनस के बारे में , कॉरपोरेट निविष्टियां, नए उपकरणों के बारे में, त्वरित सहायता युक्तियों जो कुछ भी हो, हमे भेजिए । आकाश ही विविधता की सीमा है। चुनना आपको है। तो अपने कीबोर्ड को क्लिक करें और आप जो भी कहना चाहते हैं ई-मेल / डब्लूए द्वारा हमें भेजें और हमे जल्द ही भेजिए । हम आपके विचार सुनने के लिए उत्सुक हैं । हम चाहते हैं कि, साइबर दुनिया में, जितनी संभव हो उतनी दूर तक हमारी बात फैलें ।

डिजिटली आपका :-)

जयश्री रवींद्रन

संपादक	जयश्री रवींद्रन	**उप संपादक**	हेमा विजय
प्रबंध संपादक	जानकी पिल्लई	**क्रिएटिव डिज़ाइनर**	मेरी पर्लिन
सह संपादक	सुचित्राअय्यप्पा	**हिंदी अनुवादन**	मालिनी. क

संवाददाता

चेन्नई	बैंगलोर	हैदराबाद	नई दिल्ली
संदीप कनबर +919790924905	गायत्री किरण +919844525045	साई प्रसाद विश्वनाथ +91810685503	अभिलाशा ओझा +9198105557946

गुरुग्राम	पुणे	यु.इस. ऐ
सिद्धार्थ तनेजा +919654329466	साज़ अगरवाल +919823144189	डॉ. मदन वसिष्टा +1(443)764-9006

अनंतनाग	दुर्गापुर	भुवनेश्वर
जावेद अहमद तक +911936 211363	अग्शु जाजोडिया +919775876431	डॉ. श्रुति मोहपात्रा +91 6742313311

प्रकाशक : एबिलिटी फाउंडेशन संपादकीय कार्यालय : नया न. 23, 3rd क्रॉस स्ट्रीट, राधाकृष्णन नगर, तिरुवान्मयूर, चेन्नई , इंडिया फ़ोन/फैक्स : 91 44 2452 0016 / 2440 1303. इ- मेल: magazine@abilityfoundation.org. ऐबिलिटी फाउंडेशन की ओर से जयश्री रवींद्रन द्वारा प्रकाशित, 27, 4th मेइन रोड, गाँधी नगर, चेन्नई 600 020. फ़ोन: 91 44 2452 0016. वेब साइट: www.abilityfoundation.org

समाचार और विचार साझा करने के लिए, हमें इस इ-मेल पर लिखें magazine@abilityfoundation.org

Rights and permissions: No part of this work may be reproduced or transmitted in any form or by any means, without the prior written permission of Ability Foundation. Ability Foundation reserves the right to make any changes or corrections without changing the meaning, to submitted articles, as it sees fit and in order to uphold the standard of the magazine. The views expressed are, however, solely those of the authors.

बहादुर नई दुनिया

दुनिया भर में अभिनव दिमाग और कंपनियां भविष्य और उद्यमशील सहायक तकनीकों को बढ़ावा दे रहे हैं. जो एक ऐसे युग की शुरुआत हैं, जहाँ विकलांगता वास्तव में अप्रासंगिक है। साइबथलॉन न केवल इसे दुनिया के नज़रों के सामने ला रहा है, बल्कि इसके प्रगति के लिए गति और शक्ति जोड़ रहा है, हेमा विजय बताती हैं ।

हेमा विजय

साइबथलॉन. यह एक तकनीकी प्रदर्शनी है। यह मानवता का उत्सव है । यह एक ऐसा जगह है जहां भविष्यवादी सहायकीय तकनीक जन्मजात मानव आवेग को - "सिटियस , अल्टियस फोर्टियस" (citius, altius, forties) - तेज, उच्चतर, और मजबूत बनाने के लिए मंच प्रदान करती हैं - इसमे किसी का विकलांग होना या न होना कोई मायने नहीं रखता।

2016 में शुरू हुयी एक प्रवृत्ति निर्धारक और रोमांचक अंतरराष्ट्रीय चैम्पियनशिप, "साइबथलॉन", विकलांग लोगों के लिए एक प्रतियोगिता है, जो नवीनतम और सबसे उन्नत सहायक प्रणालियों और गैजेट्स जैसे रोबोट टेक्नोलॉजी और मन को पढ़ने वाले सॉफ्टवेयर द्वारा समर्थित है।

कल्पना कीजिये ,कम्प्यूटर के खेल को सिर्फ अपने दिमाग की तरंगे का इस्तेमाल करके संचालित किया जाय - मस्तिष्क गतिविधि का पता लगाने के लिए सर पर पहने टोपी में "इलेक्ट्रोड" हों, जो "इलेक्ट्रोएन्सेफलॉफोग्राफ़" (electroencephalograph - ईईजी) रीडिंग को कम्प्यूटर को ट्रांसमिट करें,

जो इसे सोच आदेशों के रूप में व्याख्या करता है और गेम की चालें चलाता है। वाह! और यह पहले से ही प्रयोग में आने वाली रोमांचक प्रौद्योगिकियों में से एक है! साइबथलॉन 2016 के मस्तिष्क-कंप्यूटर इंटरफेस (बीसीआई) रेस के प्रतिभागि शायद मार्ग-निर्माता हो सकते हैं, लेकिन अंततः यह तकनीक व्यापक रोज़मर्रा जीवन का हिस्सा बनेगी । वह दिन दूर नहीं है जब एक क्वाड्रिप्लेजिक, इस तकनीक के सहायता से, कंप्यूटर, रोबोट बांह या व्हीलचेयर को नियंत्रित कर पाएंगे । और यही हमारा मकसद है : सहायक तकनीकों को प्रयोगशाला से उपयोगकर्तों तक ले जाना । वास्तव में, साइबथलॉन के चुनौतियां ऐसे है जिन्हे विकलांग लोग आमतौर पर अपने दैनिक जीवन में सामना करते हैं।

साइबथलॉन, जो अनौपचारिक रूप से बयोनिक ओलंपिक कहलाया जाता है, में छह दिलचस्प चुनौतियां शामिल हैं - कार्यात्मक विद्युत उत्तेजित बाइक रेस, पावर्ड आर्म प्रोस्थेसिस रेस, पावर्ड लेग प्रोस्थेसिस रेस, पावर्ड एक्सोस्केलेटन रेस, पावर्ड व्हीलचेयर रेस और मस्तिष्क-कंप्यूटर इंटरफेस रेस। विचार करना होगा , पावर लेग प्रोस्थेटिक्स दौड़ का रेसिंग पायलट पैरा-ओलिंपिक में ब्लेड धावक से कैसे अलग है? जमीन आसमान का फरक है दोनों में! पावर लेग प्रोस्थेटिक्स रेस में, रेसिंग पायलट (रेस में भाग लेने वाले पैरा एथलीटों को रेसिंग पायलट कहा जाता है) संचालित जोड़ों वाला "एक्सो-प्रोस्टेटिक डिवाइस" पहनता है (अपने शरीरीर के ऊपर) हालांकि जलनेवाले इंजन का उपयोग करना मना है । दौड़ को देखा जाय, तो यह सीढ़ियों, ढलानों और कंकड़ों से युक्त एक बाधा दौड़ थी, जो न केवल एथलीट की गति और कौशल परकता है बल्कि उपकरण के कामकाज और क्षमता को भी ।

इसी तरह, संचालित भुजा प्रोस्थेसिस दौड़ , रेसिंग पायलटों जिनके बाँहों का अंग-विच्छेद हुआ है, क्रियाशील (मोटर चालित) और स्वायत्त "एक्सो-प्रोस्थेटिकडिवाइस"के निपुणता को दिखाता है क्योंकि दौड़ में आगे बढ़ते समय वस्तुओं को विभिन्न प्रकार से पकड़ने की आवश्यकता होती है। कार्यात्मक विद्युत उत्तेजित मोटर साइकिल दौड़ में स्पाइनल कॉर्ड की चोटों वाले पायलट अपने पैरों से बाइक को संचालित करते है , इस रेस केलिए तेज़ी और धीरज दोनों की जरूरत है । संचालित एक्सोस्केलेटन दौड़ में रीढ़ की हड्डी की चोट और पैर के पक्षाघात वाले पायलट , पूर्ण एक्सोसकेलेटन डिवाइस को पहनते हुए बाधा कोर्स को पार करते हैं। संचालित व्हीलचेयर दौड़ में व्हीलचेयर उपयोगकर्ता सीढ़ियों, उन्नयन, और विभिन्न सतहों पर व्हीलचेयर को संचालित करते हैं ! बेशक, मस्तिष्क कंप्यूटर इंटरफ़ेस दौड़ में पायलट जिन्होंने गर्दन के नीचे मोटर फंक्शन खो दिए हैं , कंप्यूटर गेम में एक-दूसरे से मुखबाला करते हैं ।

रेस के दौरान, पायलट खुद इन उपकरणों को संचालित करते हैं, जो इन उपकरणों के विश्वसनीयता और सहयोगी डिवाइस के मूल्य का परीक्षण करने के साथ- साथ इसे इस्तेमाल करने वाले पायलट के कौशल का भी परीक्षण करता हैं। उच्च स्तरीय तकनीक के साथ-साथ , पैरा एथलीटों के लिए कठोर प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। हालाँकि परंपरागत पैराओलिम्पिक्स

प्रतियोगियों को सहायक उपकरणों का उपयोग करने से मना करती है, साइबथलॉन, सहायक गैजेट्स का उपयोग को प्रोत्साहित करती है । तो जब रेसिंग पायलट यहां एक प्रतियोगिता जीतता है, पायलट के साथ-साथ यह उन कंपनी और प्रयोगशाला जहाँ ये सहायक तकनीक बनते है, की भी जीत है

साइबथलॉनका प्रचार वाक्य, 'मूविंग पीपल एंड टेक्नोलॉजी '(Moving people and Technology) ने भविष्य की तकनीक पर पहुंचने के लिए परिवर्तनात्मीक सोच को उकसाया है। दुनिया भर के प्रवर्तक अब हर तरह के सहायक तकनीक प्रदान करने के लिए उत्सुक हैं जो विकलांग लोगों को अधिक आजादी, उत्पादकता, खेल, मनोरंजन और निश्चित रूप से जीवन की रोजमर्रा की गतिविधियों को प्रभावित कर सकती है । साइबथलॉन ने अधिक प्रभावी, तेज, सुविधाजनक और उत्तम सहयोगी उपकरणों का उत्पादन करने वाली कंपनियों को प्रतिस्पर्धात्मिक रूप से प्रोत्साहित करके इस प्रगति की गति बढ़ा दी है। आम आदमी के लिए, यह चैम्पियनशिप, उपलब्ध आकर्षक सहायक तकनीकों के बारे में खुलासा देता है ।

समुद्र और रेत दोनों सतह के लिए व्हीलचेयरस

व्हीलचेअर उपयोगकर्ता अब रेत, घास, बर्फ और बजरी जैसे नरम इलाके तक पहुंच सकते हैं, और यहां तक कि समुंदर के किनारे से समुद्र तक जा सकते हैं और वाटरव्हील्स (waterwheels®) के सहायता से तैर सकते हैं । फ्लोटिंग आर्मरेस्ट और बड़े पहियों जैसे सरल तकनीक का उपयोग करते हुए, इस गैजेट ने व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं के लिए अवकाश और बाहरी दुनिया को सुलभ बनाया है। इस व्हीलचेयर के छह भाग हैं - एक फ्रेम, दो आर्मरेस्ट और तीन बड़े और विस्तृत पहिये; व्हीलचेयर उपयोगकर्ता को सुरक्षित रखने के लिए एक सुरक्षा कवच भी है । इस एर्गोनोमिक (ergonomic) व्हीलचेयर को बिना किसी उपकरण के, एक मिनट से अंदर ही इकट्ठा या विभाजित किया जा सकता है । इस व्हीलचेयर में पीछे लेटने की सुविधा है और तीन संभावित अवस्थाएं है, जो, पीछे स्तिथ एक जंजीर को, खींचकर मिल सकता हैं ।

स्रोत: http://www.accessrec.com/waterwheels

प्रारंभ

2013 में साइबथलॉन ने आकार लिया, जब रॉबर्ट रीनर, प्राध्यापक, सेंसरी मोटर सिस्टम्स , इ टी एच, ज्यूरिक , ने रोज़-उपयुक्त सहायता प्रणालियों के विकास के लिए इसे शुरू किया। साइबथलॉन के लक्ष्यों में विकलांग लोगों के लिए सहायक प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान, विकास और कार्यान्वयन को बढ़ावा देना शामिल है, प्रौद्योगिकी डेवलपर्स, विकलांग लोगों और सामान्य जनता के बीच विचार-विमर्श, वर्तमान सहायता प्रणालियों की संभावनाओं और सीमाओं के बारे में जानकारी का प्रसार करना, और रोजमर्रा की जिंदगी में विकलांग लोगों की समावेश और समानता पर संभाषण को प्रोत्साहित करना ।

स्विस विश्वविद्यालय , इ टी एच, ज्यूरिक ने अक्टूबर 2016 में स्विट्जरलैंड के ज्यूरिक के निकट क्लोटन में स्विस एरेना में साइबथलॉन

> और यही हमारा मकसद है : सहायक तकनीकों को प्रयोगशाला से उपयोगकर्ता तक ले जाना ।

के पहले संस्करण संगठित किया था, जिसमे 25 देशों के 66 टीम के 74 एथलीटों ने भाग लिया। साइबथलॉन 2020 का पंजीकरण शुरू हो चुका है।

साइबथलॉन में भारत का स्थान

बेंगलुरु स्थित रइसलेग्स (Riselegs) - जो ईख से बने कृत्रिम पैर और गतिशीलता उपकरणों का डिजाइन और निर्माण करती है - द्वारा प्रशिक्षित एक टीम ने साइबथलॉन 2016 की 'पवर्डलेग प्रोस्थेसिस रेस' (powered leg prosthesis race) में भाग लिया। रइसलेग्स टीम के सदस्य थे - आविष्कारक और रइसलेग्स के संस्थापक अरुण जोशुआ चेरियन, रोहन

रोबोटिक एक्सोस्केलिटन जो पक्षाघात लोगों को चलने में मदद करें

फ़ीनिक्स, एक रोबोटिक एक्सोस्केलिटन जो पैरालेटिक लोगों को फिर से चलने में मदद करता है, भले ही व्यक्ति को कमर के नीचे पक्षाघात हो। लगभग 40,000 अमरीकी डालर के कीमत पर , सूटएक्स द्वारा निर्मित यह सूट, एक छोटे मोटर जो मानक ओर्थोटिक्स से जुड़ा होता है, पहनने वालों के कमर और घुटनों में संचार वापस लाता है। पहनने वाला व्यक्ति हर पैर की आवाजाही को नियंत्रित कर सकते हैं और बैसाखी में एकीकृत बटन की सहायता से लगभग 1.1 मील प्रति घंटे तक चल सकता हैं। सूट का वजन 27 पाउंड है,मॉड्यूलर है और व्यक्तिगत ऊंचाई और आवश्यकताओं के अनुरूप समायोजित किया जा सकता है। बैकपैक के रूप में पहना जाने वाला एक बैटरीपैक एक्सोस्केलेटन को आठ घंटे तक शक्ति देता है ।

स्रोत :https://www.technologyreview.com/s/546276/this-40000-robotic-exoskeletonlets-the-paralyzed-walk/

जॉर्ज मैथ्यू , सहायक टीम के सदस्य और दो रेसिंग पायलट - नागेश चौदाप्पा, जो की एक आई.टी प्रोफेशनल हैं और प्रजवल बसवरज, जो एक बॉडी बिल्डर हैं । चौदप्पा और बसवरजा ने इस रेस में क्रमशः 7 वां और 8 वां स्थान हासिल किया।

साइबथलॉन 2016 के दौरान सामने आए तत्यों में से प्रमुख यह है कि, रइसलेग्स द्वारा निर्माणित ईख के प्रोस्थेटिक्स की कीमत सिर्फ

कुछ हज़ार रुपये हैं जबकि बाकी प्रतिस्पर्धियों द्वारा इस्तेमाल किये गए किट की कीमत लाखों में है !

भविष्य की सहायक तकनीक

संचालित एक्सोस्केलेटन्स : पक्षाघात लोगों को चलने में मदद करता है ,हर व्यक्ति के विनिर्देशों के अनुरूप 3 डी मुद्रित व्हीलचेयर, एप द्वारा मस्तिष्क गतिविधि संकेतों की व्याख्या करके उन आदेशों पर चलने वाले व्हीलचेयर , बढ़ते बच्चों के लिए सस्ती 3D मुद्रित कृत्रिम प्रोस्थेटिक बाहें , ग्रेटा (Greta) ऐप जो चल-चित्रों का ऑडियो विवरण देता है, एलेक्ट्रोनिक चश्मा जिससे अंधे देख सकते हैं, उंगली-स्तर पर बायोनिक बाहें को नियंत्रण (जो पियानो बजाने में भी मदद करें) करने के लिए अल्ट्रासाउंड तकनीक, कॉक्लिएर इम्प्लांट (cochlear implants), जो बाहरी उपकरण के बिना स्मार्ट फोन से सीधे स्ट्रीम करता है . ...

आज, साहसी नवोन्मेष अति तीव्र गति पर हो रहा है, और नए प्रोटोटाइप तैयार होके पहले से कहीं ज्यादा तेजी से बाजार में आ रहे हैं ... कुछ सहायक गैजेट्स की एक झलक दिखाते हैं ।

स्रोत: ETH Zurich Nicolo Pitaro

विचारों का संकलन

वैष्णवी वेंकटेश द्वारा

वैष्णवी वेंकटेश

पिछले कुछ वर्षों से, ऐबिलिटी फ़ेस्ट को एक अनूठी शैली के फ़िल्में प्राप्त हो रही है। हालाँकि, हमें दुनिया भर से प्रेरणादायक फ़िल्में हमेशा प्राप्त होते हैं , यह अनूठी शैली हमे न केवल फिल्मों के प्रवित्ति पर बल्कि , संभावनाओं पर प्रतिबिंबित करने को विवश करता है। इस शैली में विकलांगता और तकनीकों पर बने फिल्मों हैं ।

इन फिल्मों को देखते हुए, मुझे अक्सर आश्चर्य होता है कि क्या यह वास्तविक है, या विज्ञान कथा है - बयोनिक बाहें एक्सोस्केलेटन जो मानवीय मांसपेशियों के कार्य को दोहराते हैं, नेत्र ट्रैकिंग प्रौद्योगिकियां जो लोगों को संवाद

स्मार्ट चश्मा - अंधों के लिए नयी आशा ।

स्रोत: https://www.cnbc.com/2017/09/20/these-amazing-electronic-glasses-help-the-legally-blind-see.html

यह एक ऐसा आविष्कार है जो आंखों के रोग - जैसे स्टारगार्ड्ट रोग, ऑप्टिक एट्रोफी , धब्बेदार अध: पतन और ग्लोकोमा के शिकार व्यक्तियों को फिर से देखने में मदद करता है । इसाइट 3 ग्लास की कीमत 10,000 अमरीकी डालर है। इसाइट 3 का इस्तेमाल करने वाले पुस्तकों और सड़क के संकेतों को पढ़ने में सक्षम हैं, दूर से वस्तुओं को देख पाते हैं और जान पाते हैं कि उनके दोस्तों और रिश्तेदारों के चेहरे वास्तव में कैसा दिखता हैं। मतलब यह है की , वे उन दृश्यों को देख सकते हैं जो केंद्रीय दृष्टि के नुकसान के वजह से उन्हें वंचित था । इसाइट 3 वैसर हेडसेट जैसा दिखता है जिसमे एक उच्च गति, हाई-डेफिनिशन कैमरा होता है जो उन सभी दृश्यों को संग्रहीत करता है जिसे उपयोगकर्ता देखते हैं । यह वीडियो फ़ीड को बढ़ाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करता है और उपयोगकर्ता की आंखों के सामने इसाइट के ओएलडी स्क्रीन के माध्यम से उपयोगकर्ता के आंखों के सामने वीडियो प्रदर्शित करता है। यह छवि को 24 गुना बढ़ाता है। पहनने योग्य हेडसेट में डिजिटल सामग्री स्ट्रीम करने और चित्र और वीडियो प्रसारित करने के लिए वाई-फाई और एचडीएमआई क्षमताएं हैं।

> आज, साहसी नवोन्मेष अति तीव्र गति पर हो रहा है, और नए प्रोटोटाइप तैयार होके पहले से कहीं ज्यादा तेजी से बाजार में आ रहे हैं ..

करने में मदद करती हैं ... सूची लम्बी है। पहली नज़र में, यह हमेशा विस्मयकारी होता है लेकिन एक दूसरे और शायद तीसरे नज़र के बाद में, मैं इस तरह की तकनीक के इरादे और प्रभाव का, “अवरोधों को तोड़ने” की कोशिश पर प्रतिबिंबित करना शुरू कर देती हूं ।

मुझे पूरी तरह से विश्वास है कि कुछ आविष्कार विकलांग लोगों के लिए बहुत फायदेमंद रहा - आदिम मोबाइल फोन के स.एम्. स जैसे सुविधाएँ बधिर & मूक लोगों के लिए एक क्रांति बन गई। आवाज से पाठ तकनीक (और पाठ-से-आवाज), जैसे (जेऐडब्लूएस) ने अंधों के लिए ज्ञान की पूरी दुनिया खोल दी । और हर गुजरते दिन के साथ, सहज और सुधरे हुए व्हीलचेयर मिलते हैं जिसे इसको प्रयोग करने वाले व्यक्ति खुद नियंत्रित कर सकते हैं और उसे चलने के लिए दूसरों पर उन्हें कम निर्भर होना पड़ता है। हाल ही में मैंने सीढ़ियों पर चढ़ने वाले व्हीलचेयर के बारे में पढ़ा, जिसकी - विकलांगता अमित्र-इमारतों के लिए - हमे सख्त जरूरत है ।

हर गुज़रते साल के साथ ये तकनीकें अधिक परिष्कृत और उपयोगकर्ता के अनुकूल मिलते होते जा रहे हैं , जिससे विकलांग लोग स्वतंत्र जीवन जी पा रहे हैं । आज अविकसित या खंडित अंगों के लिए एक बायोनिक प्रतिस्थापन मिलते हैं । “स्मार्ट ग्लासेज “ दृष्टी क्षीणित लोगों को, उनके आंखों के सामने वाले वस्तुओं को, सरल काले और

सफेद छवियों में बदलकर देखने में मदद करती हैं। आज ऐसे एक्सोस्केलेटन मिलते हैं जो इतने उन्नत हैं कि जो लोग पहले व्हीलचेयर तक ही सीमित थे, वे अब चलने का प्रयास कर सकते हैं। साइबथलॉन एक ऐसे खेल स्पर्धा है जो ऐसे उन्नत सहायक तकनीकों का उपयोग करने वाले लोगों के लिए हैं ।

लगता है कि हम एक ऐसी दुनिया की ओर प्रगति कर रहे हैं जो विकलांग लोगों के लिए बाधाओं को धुंधला कर रहा है । है ना?फिर भी, मैं इन सभी प्रगतियों के बारे में एक भावभीनी एहसास के साथ लिखती हूं। क्या समाज में केवल भौतिक बाधाएं विद्यमान हैं? और क्या इन उपकरणों को विकसित करने का इरादा वास्तव में विकलांग लोगों

> कल्पना कीजिये ,कम्प्यूटर के खेल को सिर्फ अपने दिमाग की तरंगे का इस्तेमाल करके संचालित किया जाय । वह दिन दूर नहीं है जब एक क्वाड्रिप्लेजिक, इस तकनीक के सहायता से, कंप्यूटर, रोबोट बांह या व्हीलचेयर को नियंत्रित कर पाएंगे ।

को सशक्त बनाना है या हम विकलांगता मुक्त एक “उत्तम” दुनिया स्तापित करने की कोशिश कर रहे हैं? इस आलेख के लिए अनुसंधान करते समय, मेरे सामने एक दृष्टिकोण आया जिसके मुताबिक सहायक तकनीकों का निर्माण करने के पीछे एक संभावित इरादा हैं। यह सुझाव दिया गया कि प्रौद्योगिकी इतनी निर्बाध हो, कि हमें यह नहीं जानना चाहिए कि किसी व्यक्ति में विकलांगता है । हालांकि यह दृष्टिकोण सिर्फ एक महान गुणवत्ता के उत्पाद के निर्माण के परिप्रेक्ष्य से हो सकता है, लेकिन ऐसे दृष्टिकोण काफी चिंताजनक है। हम विकलांग लोगों को जानते हैं। क्या

ध्वनि प्रोसेसर और इम्प्लांट्स जिन्हें स्ट्रीमिंग डिवाइस की आवश्यकता नहीं है

स्रोत: : https://techcrunch.com/2017/07/26/apple-and-cochlear-team-up-to-roll-out-the-first-hearing-aid-implant-made-for-the-iphone/

ऐप्पल और कॉक्लिएर के साझेदारी से कॉक्लिएर नुक्लेउस 7 (Nucleus 7) ध्वनि प्रोसेसर बनाया है जो अनुकूल आई फोन, आई पैड या आइ पॉड टच से सीधे ध्वनि प्रोसेसर को ध्वनि स्ट्रीम कर सकता है। इस उपकरण को, शल्यचिकित्सा से एम्बेडेड इम्प्लांट रखे लोग भी, ध्वनि को नियंत्रित और कस्टमाइज़ करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं । इस प्रत्यारोपण को अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने अनुमोदित किया है। हेडफ़ोन या अन्य ब्लूटूथ उपकरणों के जैसे ही, इम्प्लांट को जैसे ही आईफोन के साथ युग्मन किया जाता है, , आईफोन के वॉल्यूम नियंत्रणों के मदद से इसे नियंत्रित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब एक फोन कॉल आता है, तो आप अपने प्रत्यारोपण के भीतर वॉल्यूम सेटिंग पर कॉल सुन सकते हैं। नए न्यूक्लियस 7 की बैटरी लंबे समय तक चलती है और यह अपने पूर्ववर्ती, न्यूक्लियस 6 ध्वनि प्रोसेसर से भी छोटा और 24 प्रतिशत हल्का है, जिसके कारण बधिर बच्चों के लिए आदर्श है।

ल्यूक आर्म खोए हुआ हाथ का कार्य करता है

स्रोत : http://www.mobiusbionics.com/the-luke-arm.html

ल्यूक आर्म एक मॉड्यूलर कृत्रिम बांह है जो ट्रांसरेडीएल , ट्रांसह्यूमरेल और कंधे के विच्छेदन जैसे स्तिथियों में विन्यास योग्य है । इसमें 10 संचालित स्वतंत्रता के दर्जे हैं जिसमे संचालित कंधे, एक ह्यूमरेल रोटेटर और उलर्नार / रेडियल विचलन सहित कलाई फ्लेक्सर शामिल हैं । स्वतंत्रता की कई शक्तियों को एक साथ उपयोग किया जा सकता है। हाथ में कई पूर्व क्रमादेशित पकड़ होते हैं जो चार अलग-अलग नियंत्रित डिग्री का उपयोग करते हैं। हाथ में एक संवेदक भी शामिल है जो पकड़ बल के बारे में प्रतिक्रिया प्रदान करता है। ल्यूक आर्म हल्के बारिश और धूल के लिए प्रतिरोधी है। ल्यूक बांह को इनपुट उपकरणों जैसे सतह ईएमजी इलेक्ट्रोड और दबाव स्विच, सहज वायरलेस आईएमयू द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है । क्लिनिकल टीम और ग्राहक मिलकर इनपुट कॉन्फ़िगरेशन विकसित करते हैं जिससे ग्राहक की आवश्यकताएं पूरा हों ।

हम यह बताना चाहते हैं कि समाज में एकीकृत होने के लिए उन्हें ऐसे निर्बाध तकनीकों की जरूरत है? क्या समाज को तकनीकी उपलब्धि के बावजूद उन्हें एकीकृत करना नहीं चाहिए?

मैं जानती हूँ कि मैं बहुत बयानबाजी सवाल कर रही हूँ, लेकिन मेरा विश्वास है कि प्रौद्योगिकता व्यक्तिगत चयन का मामला है । सुनवाई संबंधी विकलांग व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार कॉक्लिएर इम्प्लांट पेश किया जा सकता है, लेकिन क्या वे इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं या नहीं, यह व्यक्तिगत चुनाव का मामला है। किसी को अनुकूलन करने के लिए मजबूर करना, ताकि वे " गैर विकलांग " समाज के अंग बन सके उन बाधाओं से भी बदतर है जिन्हे वे सामान्य रूप से सामना करते हैं ।

> और अगर वे एक सहयोगी उपकरण को न लगाने का फैसला करते हैं, तब भी हमें एक ऐसी दुनिया स्थापित करनी है जहाँ वे आराम से रह सकें।

भौतिक अवरोधों को तोड़ने के पहले धारणाओं के अवरोधों को तोड़ना जरूरी है। हमें सभी लोगों को समाज में स्वीकार करने, समावेश करने और एकीकृत करने के लिए सीखना होगा, चाहे वे गैर-विकलांग हों या विकलांग । यदि लोग उन तकनीकों का उपयोग करना चाहते हैं जो उन्हें अधिक आजादी दे सकते हैं, तो ये उनका चयन है। और अगर वे एक सहयोगी उपकरण को न लगाने का फैसला करते हैं, तब भी हमें एक ऐसी दुनिया स्थापित करनी है जहाँ वे आराम से रह सकें। यही हमेशा हमारी वास्तविकता होगी। ■

सिनेमा और समावेशन की खुशी

जीवन विविधता का जश्न है , ऐबिलिटी फ़ेस्ट 2017: चेन्नई में आयोजित भारत अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता फिल्म समारोह, को अनुभव करने के बाद उत्साहित शान्ता गेब्रियल कहती है ।

शान्ता गेब्रियल

यह साल का वो समय है जिसका हम इंतज़ार करते है, लेकिन अफसोस यह है की यह हर दो साल में एक ही बार आता है! एस.पी.आई सिनेमा में एक दिन या उसका एक हिस्सा खर्च करने का विचार आरामदायक है । पर यह अनुभव मुझे व्यावसायिक सिनेमा देखने के आराम से भिन्न है । जिन फिल्मों को मैं देखने के लिए उत्सुक हूं वे केवल मनोरंजक और जानकारीपूर्ण नहीं हैं, बल्कि वे विकलांगता

के बारे में मेरी जागरूकता बढ़ाते हैं और मैं विविधता के उत्सव, जो ही जीवन है, में आराम महसूस करती हूँ! स्पष्टतः, सीखने के लिए लोकप्रिय सिनेमा से बेहतर माध्यम और कुछ नहीं हो सकता।

दुनिया भर से फिल्मों को संग्रहित करना मुश्किल काम है और मैं एबिलिटी फाउंडेशन टीम को इसके लिए बधाई देती हूँ जो यह कठिन कार्य कर रहे हैं । वैश्विक फिल्म त्योहारों की फिल्में जीवन और विकलांगता के अपने सुंदर चित्रलेखन के जरिया हमे इन मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनती है। मुझे यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि एबिलिटी फ़ेस्ट एक ऐसी जगह पर पहुंची है जहां प्रमुख अंतरराष्ट्रीय निर्माता इस उत्सव में अपने फिल्मों का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक हैं , क्योंकि वे इसकी व्यापकता और पहुँच के बारे में जानते हैं ।

अपने शुरुआती भाषण में, महोत्सव के निदेशक रेवती आशा केलुन्नी, और महोत्सव के अध्यक्ष और संस्थापक निदेशक, एबिलिटी फाउंडेशन, जयश्री रवींद्रन,ने फिल्म उत्सव के उद्देश्य पर टिप्पणी किया और फाउंडेशन के सभी अन्य कामों, जो समावेशिता की ओर फाउंडेशन को ले जाता है के बारे में बात किया । उप-शीर्षक और ऑडियो वर्णन जैसी तकनीकों के माध्यम से फिल्मों को अभिगम्य बनाने से बेहतर तरीका क्या है?

तमिल ब्लॉकबस्टर , 'विक्रम वेदा', जिसमे विजय सेतुपति और आर. माधवन ने मुख्य भूमिका निभाई है, को इस तरह ऑडियो-वर्णित किया गया कि थिएटर में हर कोई इसको अनुभव कर सके, जो इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है ।

स्पष्टतः, सीखने के लिए लोकप्रिय सिनेमा से बेहतर माध्यम नहीं हो सकता।

एम. गुणशेखरन, एक अंधे व्यक्ति जिन्होंने सुपरहिट फिल्म 'विक्रम वेदा' का एक ऑडियो-वर्णित संस्करण देखा, द हिंदू मेट्रोप्लस के लिए फिल्म की समीक्षा की।

"एक अनुभव जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता

मैं क्राइम मूवीज़ का एक बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ और मैं जितना क्राइम-थ्रिलर देख सकता हूं उतना देखने की कोशिश करता हूँ । फिर भी, हाल ही की किसी भी फिल्म ने मुझे इतना अवशोषित नहीं किया जितना विक्रम वेदा ने , खासकर जब मैंने बुधवार को इसका ऑडियो-वर्णित स्करण देखा । बड़े स्क्रीन पर प्रगट हो रहे किसी भी दृश्य को समझने के लिए मुझे किसी की स्पष्टीकरण का इंतज़ार नहीं करना पड़ा । थिएटर में हर किसी के साथ एक फिल्म का अनुभव करने का आनन्द को मैं कभी नहीं भूलूंगा ।फिल्म की खोजी प्रकृति(InvestigativeNature) की वजह से यह आनंद दो गुना था। यहां तक कि एक छोटी सी छवि या जांच की सुराग, जाँच पड़ताल को बदल सकता है, जिसके कारण देखने के लिए 'क्राइम थ्रिलर' सबसे मुश्किल होते हैं। उदाहरण के लिए, मैंने हाल ही में एक अन्य 'क्राइम थ्रिलर', निबुनन (Nibunan) देखा । इस फिल्म में , अपने दुश्मनों को समाप्त करते समय खलनायक का एक अनोखा ढंग होता है, दर्शकों में से हर कोई इन मोड़ों पर रोमांचित था, मुझे फिल्म के समाप्ति तक इंतजार करना पड़ा ताकि कोई मुझे समझाये । यही कारण है कि हाल ही में हुए विक्रम वेदा स्क्रीनिंग बहुत आनन्दायक थी। वह दृश्य जिसमे विक्रम (माधवन) यह जांच करता है कि उनके मित्र शमौन (प्रेम) को चंद्रा (वरलक्ष्मी सरथकुमार) ने कैसे हत्या किया, अपने ऑडियो वर्णना के कारण मज़ेदार था। वह पता लगता है कि चंद्रा की हाथों पर बंदूक कैसे रखी गई , ताकि ऐसा लगे कि उसने गोली मारी हो । मैंने इसे बहुत आकर्षक पाया। मुझे इस फिल्म के गाने भी बहुत अच्छे लगे, खासकर 'टसकु टसकु' गाना। नए 'कुत्थु' गानों को समझना इतना मुश्किल है कि हम उसका आनंद नहीं ले पाते । लेकिन यह गाना अलग और मजेदार था क्योंकि इसे सुनने से हमें लगता है कि हम उत्तर चेन्नई में हैं ।

मैं विजय सेतुपति का भी प्रशंसक हूँ। वास्तव में मैं रजनी का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं, लेकिन विजय सेतुपति के फिल्मों का उनके सामाजिक रूप से जागरूक प्रकृति के कारण आनंद ले रहा हूँ । पा पांडी, एक और फिल्म थी, जिसका मैं आनंद नहीं ले पाया। इस फिल्म मुझे बहुत अच्छा लगा, फिर भी वो खूबसूरत क्षणें - जब राजकिरण अंततः रेवती से मिलता है और उसके साथ समय बिताता है - सिर्फ छवि और बजते संगीत के जरिये प्रस्तुत किया जाता है । काश किसी ने इसका ऑडियो वर्णन का काम किया होता, ताकि हम फिल्म का अच्छी तरह से आनंद ले सकें। मैं आशा करता हूँ कि आगे बहुत सी फिल्मों को ऑडियो-विवरणात्मक संस्करणों के साथ रिलीज किया जायेगा ताकि मेरे जैसे फिल्म- प्रेमि इस आनंद से वंचित न हों ।"

(जैसा कि विशाल मेनन से कहा गया है)

स्रोत : द हिंदू मेट्रोप्लस

फिल्म का ऑडियो वर्णन बदलते दृश्य और तेज गति वाले एक्शन सिनेमा के साथ शानदार ढंग से मेल खाती है और मेरे भय के विपरीत, सिनेमा के कहानी में दखल नहीं दे रहा था। जब मैंने आँख बंद करके फिल्म का अनुसरण करने की कोशिश की, तो ऑडियो वर्णन बहुत ही उपयोगी और दिलचस्प लगा । हालांकि, लंबे समय तक मैंने ऐसा नहीं किया क्योंकि मुझे देखना था! वैसे तो मैं अंधी नहीं हूँ । तभी मुझे अहसास हुआ कि ... मेरे विपरीत, जो लोग नहीं देख पाए उनके पास और कोई विकल्प नहीं है। फाउंडेशन का, विकलांगता के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को संवेदनशील बनाने का उद्देश्य, उस क्षण मुझे स्पष्ट हुआ !

*T*फिल्म की ऑडियो वर्णन बदलते दृश्य और तेज गति वाले एक्शन सिनेमा के साथ शानदार ढंग से मेल खाती है और मेरे भय के विपरीत, सिनेमा के कहानी में दखल नहीं दे रहा था।

11 सितंबर के सुबह शुरू हुई फिल्म फेस्टिवल का उद्घाटन औपचारिक रूप से उस शाम को हुआ था और दिल को छूनेवाला इजराइली फिल्म 'माय हीरो ब्रदर' (My Hero Brother) ने त्योहार की गति स्थापित किया । यह पुरस्कृत फिल्म, डाउन सिंड्रोम वाले एक उल्लेखनीय युवा समूह के बारे में है , जो हिमालय में एक ट्रेक पर अपने भाई-बहनों के साथ चलते हैं। जब यात्रा कठिन होता है तब हम देख पाते हैं की उनमे कितना साहस और धैर्य है ! भाई बहन या परिवार इसका बोझ सहते हैं, और कठिन परिस्थितियों में डाउन सिंड्रोम वाले युवाओं को शारीरिक रूप से उठाके ले जाना पड़ता है । हताशा, हालांकि क्षणिक हो, स्पष्ट दिखता हैं ,ध्यान देने की जोर से मांग की जाती है, माएं जो घर पर है, उन्हें याद किया जाता है और उनके लिए तरसते है, शारीरिक दर्द और पहाड़ों में बहुत सख्त ट्रेक की कठिनाई हर अंग में तीव्रता से महसूस होती है, और विकल्प के रूप में घुड़सवारी चढ़ाई आकर्षक होते हैं। इन सब परिस्थितियों में विशेष जरूरत वाले व्यक्तियों की मानव प्रकृति स्पष्ट उकेरता है । क्या हम भी ऐसे भावनाओं से नहीं गुजरते? इस युवा समूह के बारे में यह जितना सच ही, उतना ही भाइयों और बहनों की संवेदनशील प्यार और देखभाल। वे इन युवाओं को प्रोत्साहित करते हैं और उनके साथ मज़े करते हैं पर हर बार उन्हें लिप्त नहीं करते। उन्हें पता है कि कब उन्हें मनाना है और कब उनके साथ सख्ती से पेश आना है। संक्षेप में, वे उनके साथ किसी अन्य छोटे सहोदर जैसे बर्ताव करते हैं। सफल ट्रेक की उपलब्धि के साथ फिल्म के समाप्त होने के बाद भी भाई-बहनों के बीच और उन विकलांग परिवारों के बीच के गहरे संबंधों हमारे भीतर प्रतिध्वनित रहती है! यह दिल को छूनेवाला फिल्म नए क्षितिजों को खोलता है और विशेष जरूरतों वाले लोगों और उनके परिवारों के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है।

निर्माता का भाषण

अमेरिकी फिल्म 'ए नार्मल लाइफ' (A Normal Life) मेरे पसंदीदा फिल्मों में से एक है । गहरी भावनाओं को, बिना किसी कार्रवाई के, लेकिन शब्दों के पीछे छिपी हुई दुनिया, सोच और चाल को, इतने चुप्पी से जिस तरह प्रस्तुत किया गया है , वह मुझे अच्छा लगता है। 19 वर्षीय लेखक निर्देशक एलेक्स हर्ज़ की यह संवेदनशील और दिल को छूने वाली अर्ध-आत्मकथात्मक फिल्म, एक युवा की कहानी है ,जो जल्द ही कॉलेज

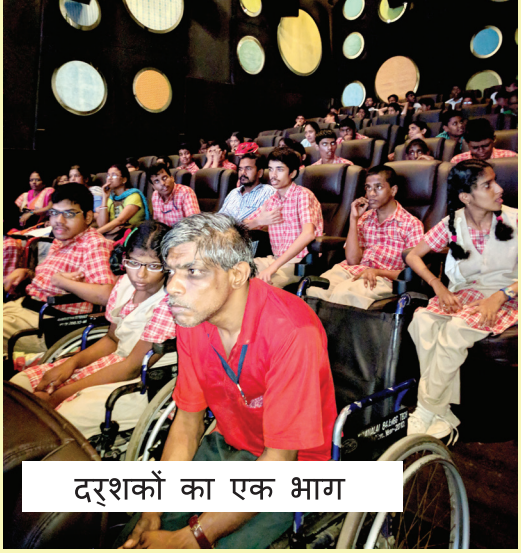

दर्शकों का एक भाग

जा रहा है और डाउन सिंड्रोम वाले अपने भाई के स्वावलंबन के बारे में चिंतित है। एक परिवार की कहानी,जहां माँ अपने बेटे को मोबाइल पर ज्यादा वक्त बिताते देख बेचैन होती है, और जब बड़ा बेटा उसे समझाने की कोशिश करता है कि इस उम्र के अन्य बच्चों की तरह उसके छोटे भाई को थोड़ा बहुत स्वतंत्रता चाहिए और माँ को उसे अकेला छोड़ना चाहिए, वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पाती, और उसका पिता, जो बहुत कम शब्दों का आदमी है, स्थिति को दोनों तरफ से देखता है, पर इस दृष्टिकोण को व्यक्त करने में हिचकिचाता है, और दोनों भाई, जो एक दुसरे से बहुत प्यार करते है, मानव प्रकृति का समज , यह सब अति संवेदनशीलता के साथ इस 73 मिनट के फिल्म में दर्शाया गया ही। भाइयों के बीच का गहरा रिश्ता स्पष्ट रूप से दिखाया गया है , और अपने छोटे भाई की आजादी के लिए जवान आदमी की इच्छा और उसकी यह चिंता कि उसके उम्र के किसी भी अन्य लड़कों की तरह उसे भी बड़े होने की मोका मिलना चाहिए, जो महाविद्यालय जाने की उसकी उत्साह को थोड़ा कम करता है।

एबिलिटी फ़ेस्ट एक ऐसी जगह पर पहुंची है जहां प्रमुख अंतरराष्ट्रीय निर्माता इस उत्सव में अपनी फिल्मों का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक हैं , क्योंकि वे इसकी व्यापकता और उपस्थिति के बारे में जानते हैं ।

भारत की वृत्तचित्र, ‘ टू फ़ीट टु फ्लाई’ (Two feet to Fly) एकमात्र वृत्तचित्र था जिसे मैंने देखा। इसमें यह बताया गया है कि कैसे छह शौकिया धावकों अपने बंधन को तोड़ने के लिए दौड़न शुरू करते हैं । जब उनमें से एक, कमजोर गले की समस्या के साथ ही कर्कश आवाज में “अई हाव अ ड्रीम “(I have a dream) गाता है, तो हम जान पाते हैं कि, उनमें से प्रत्येक को संघर्ष करना और अपने सपनों को साकार करना कितना महत्व रखता है । यह फिल्म सभी बाधाओं के बावजूद आगे बढ़ने की अदम्य मानव भावना को मनाता है।

कनाडा से ‘डेन एंड मार्गो’ (‘Dan and Margot) ने शुरू में मुझे भ्रमित और निराश किया, क्योंकि ऐसा लगा कि कहानी आगे बढ नहीं रही है । जल्द ही, मुझे समझ में आया कि मार्गो अपनी जिंदगी में यही संघर्ष कर रही है । अपने कल्पना की जुनून से पीड़ित - क्या डेन सिर्फ उसके दिमाग में ही रहता है - और उसके डर, यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि यह फिल्म इसे विखंडित प्रारूप के माध्यम से बताती है। एक शक्तिशाली फिल्म, ‘डेन एंड मार्गो ‘ एक आधुनिक युवती, जो “स्किज़ोफ्रेनिया” (schizophrenia) के कारण खोया अपने ज़िन्दगी के तीन साल को पुनः प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है, की जिंदगी को एक अंतरंग रूप से दिखाता है । मार्गो, उन सभी मानसिक बीमारियों की कई सापेक्ष कहानियों को आवाज देती है, और किसी भी व्यक्ति के विफल होने का अधिकार, पिछले दुख और आशाओं के साथ जीने के अधिकार को दर्शाती है , जो मानव अस्तित्व की कुंजी है। फिल्म के समाप्ति के करीब , मार्गो की सरासर साहस, आजादी की भावना और उपलब्धियां सामने आती है जब वह आखिरकार ऑस्ट्रेलिया पहुँचती है।

इंग्लॅण्ड से ‘द क्वाइट ओन्स’ (The Quiet Ones) बड़ी चतुराई से तैयार की गई फिल्म है और इसने आखिर तक मुझे चकरा दिया । बधिरों के बोर्डिंग स्कूल का एक शिक्षक की बेरहमी से हत्या हो जाती है और संदिग्धों को चार छात्रों को कम कर दिया गया है। हत्या किसने किया? क्याजा सूस क्लार्क और मनोवैज्ञानिक

सांकेतकि भाषा - एक परचिय

डॉ. बार्टन समय पर हत्यारे को पहचान बता पाएंगे ?

त्योहार का समाप्ति फिल्म जर्मनी से 'ऐट आई लेवल' (At Eye Level) थी। आयोजक इस से ज़्यादा अधिक निविदा और शक्तिशाली फिल्म चुन नहीं सकते । तीन पुरस्कार विजेता, फ़िल्म आपको कई जगहों पर रुलाती है; दुःख के कारण नहीं, बल्कि स्कूल और बोर्ड साथियों के क्रूर और बदमाश व्यवहार की वेदना से, और इसके बाद मिश्रित भावनाओं के साथ, जब फिल्म एक मोहक युवा लड़के के जीवन को दर्शाती है - उसके सभी कड़वे सदमे और दर्दनाक नखरे- और उसके शांत, साहसी और छोटे कद वाले पिता जो अति हंसमुख, स्नेहशील और संवेदनशील हैं । 11 वर्षीया मीशि, बच्चों के पालक-घर में रहता है और एक दिन उसे पता चलता है कि उसका पिता कौन है। लेकिन जब वह अंततः अपने पिता टॉम से मिलता है, उसे एक झटका लगता है क्योंकि उसका पिता एक बौना है। इस तीक्ष्ण कहानी में, मीशि शर्मिंदगी और लज्जा से संघर्ष करता है, जबकि टॉम पितृत्व की चुनौती को स्वीकार करने का पूरा कोशिश करता है। फिल्म के ख़त्म होने के बाद भी एक ही बात हमारे मन में रहती है - हालाँकि हम अपने माता-पिता का चयन नहीं कर सकते हैं, पर जब मीशि को - एक कड़वे निराशा के समय, जिसने उसके सारे उम्मीदें नाकाम कर दिया- एक ऐसा दुर्लभ विकल्प अनोखे ढंग से प्रस्तुत हुआ। फिर भी, टॉम के साथ उसका संक्षिप्त समय उसे प्यार में सबक सिखाता है। इसके बाद मीशि ने जो अपने पिता के साथ जो 'आई लेवल' का है, रहने का विकल्प चुनता है बहुत ही भावनात्मक है । सिनेमा हॉल से निकलते समय मैं अभिभूत हो गयी।

वास्तविक जीवन में सभी बाधाओं को पार करने वाले लोगों से मिलने और जुड़ने का अवसर, चार दिनों के रील जीवन का एक बड़ा प्राप्ति था! मुझे अंशु, एक नरम दिली बधिर नौजवान, से मिलकर बेहद ख़ुशी हुई , जो अकादमिक सम्मेलनों में, अपनी मां से बोलने के लिए सीखने के अपने खुद के अनुभवों के आधार पर , बात करता है उसकेही शब्दों में, उनकी शैक्षिक प्रगति वास्तव में आश्चर्यजनक है, जीवन की शुरुआत में न बोल पाने से लेकर आज उसका पेशा तो बोलना ही है!! जब भी संभव हो मैं इस हंसमुख नरम दिली व्यक्ति से संपर्क करने का प्रयास करती हूँ।

वास्तविक जीवन में सभी बाधाओं को पार करने वाले लोगों से मिलने और जुड़ने का अवसर, चार दिनों के रील जीवन का एक बड़ा प्राप्ति था!

मेरे लिए ऐबिलिटी फ़ेस्ट 2017, विकलांगता की उत्थान शक्ति और सबके लिए आशा को प्रतिबिंबित करने का एक शानदार मौका है। यह मुझे संवेदीकरण के ओर एक कदम और आगे ले जाता है, जहां मुझे फिर एक बार अवगत कराया जाता है, कि हमेशा समान अवसरों, विविधता और समग्रता के प्रति जागरूक रहना चाहिए। एबलिटी फाउंडेशन के सभी दोस्तों से मिलने के लिए मुझे यह एक बहुत अच्छा मौका देता है। इस लेख के द्वारा, उनके कार्यों के लिए मैं अपना कृतज्ञता और प्रशंसा व्याख करना चाहती हूँ । यह एक ऐसा समूह हैं जो दुर्लभ नस्ल की प्रतिबद्धता फैलती है, क्योंकि यह उच्च स्तर के ऊर्जा और इससे भी अधिक उच्च स्तर के उत्साह के साथ आता है!

इन बातों पर प्रतिबिंबित करते हुए मैं 2019 के लिए इंतज़ार कर रही हूँ ! ■

सीमाओं को धकेलना समावेश का जश्न

यशस्विनी राजेश्वर

यशस्विनी राजेश्वर, इनसिंक (Insync) #एम्2के 2017, (M2K2017) मनाली से खारदुंग ला तक की सम्मिलित अग्रानुक्रम साइकिलिंग अभियान (Inclusive Tandem Cycling) के दूसरे संस्करण के सुखद अनुभवों को याद करते हुए समावेशन के सही अर्थ पर गौर करती है ।

फोटोग्राफी : अमृत वत्स

मेरे ख्याल से सरचू में ही समावेश का मेरा पसंदीदा क्षण था। हम में से कुछ लोगों ने आकाश में सितारों को देखने के लिए ठंड को बहादुरी से सामना करते हुए एक छोटे पहाड़ी पर चढ़ने का फैसला किया। आकाश-गंगा स्पष्ट रूप से दिख रहा था , और ठंड के कारण हमारे हड्डियों में जो कंपकपाहट हो रही थी वो भी हमारे सिर के ऊपर ब्रह्माण्ड का जो दृश्य उभर रहा था , उसको आश्चर्य के साथ देखने से रोख नहीं पायी । कुछ महीनों पहले हम सब अजनबी थे, समावेशन , साहस और सीमाओं को धकेलने के सामान्य उद्देश्य से बाध्य थे। उस पहाड़ी के ऊपर, उस रात, हर कोई चुप था, फिर भी इसके पहले मैंने समझ का इतना मजबूत बंधन महसूस नहीं किया ।

आकाश-गंगा स्पष्ट रूप से दिख रहा था, और ठंड के कारण हमारे हड्डियों में जो कंपकपाहट हो रही थी वो भी हमारे सिर के ऊपर ब्रह्माण्ड का जो दृश्य उभर रहा था , को आश्चर्य के साथ देखने से रोख नहीं पायी ।

यह इनसिंक # एम 2के2017 का दूसरा दल था। इसका आयोजन पुणे स्थित लाभ-निरपेक्ष संस्था एडवेंचर्स बियॉन्ड बैरियर्स फाउंडेशन (एबीबीएफ) - जो विकलांग व्यक्तियों के समावेशन के लिए साहसिक खेल को एक मंच के रूप में उपयोग करता है - ने किया । जब दिव्यांशु गणत्रा , एबीबीएफ के संस्थापक (कैविनेकर एबिलिटी पुरस्कार , 2016 में विशेष मान्यता पुरस्कार के प्रापक) पिछले साल जब अग्रानुक्रम साइकिलिंग पर इस मार्ग को पूरा करने वाला पहले अंधे साइकिल चालक बने , टीम ने फैसला किया कि उन्हें फिर से इसमें भाग लेना होगा, हालांकि एक बड़े और बेहतर पैमाने पर । इस प्रकार भारत का पहला समावेशी अग्रानुक्रम साइकल चलानेवाले अभियान (Inclusive Tandem Cycling), का सपना पैदा हुआ था, जिसमे 24 साइकिल चालकों ने गाड़ी चलने लायक दुनिया की सबसे ऊँची सड़क -मनाली से खारदुंग ला - में साइकिल चलायी । मार्ग, जिसमें पांच पहाड़ी दर्रे शामिल हैं, बहुत ही कठोर था । अक्सर, मुश्किल से गाड़ी चलने लायक सड़क मिलते । प्रतिभागियों ने बड़े पैमाने पर तम्बू में डेरा किया और प्रतिदिन

लगभग 50 किलोमीटर की दूरी सायक्लिंग किया। 24 प्रतिभागियों में से , छह अंधा , तीन अपंग, और अन्य गैर-विकलांग साइकिल चालक जिन्होंने समावेशी ,सुलभ और साहसिक खेलों के विकास के लिए काम करने का वचन दिया था। इस संदर्भ में 24 व्यक्ति - प्रतिभागी और चालक के दूसरा दल - एक अगस्त की सुबह मनाली में मिली और इस अभियान के लिए निकल पड़े ।

एबीबीएफ का ज्यादातर काम व्यक्तियों के अन्वेषण करना है। मजबूत व्यक्तिगत रिश्ते प्रणालीगत बाधाओं और सामाजिक रूढ़िताओं को पार कर सकते हैं - इस विश्वास पर स्थापित, संगठन सहानुभूति, सौहार्दपूर्ण भावना को व्यक्तिगत स्तर पर बढ़ावा देने की कोशिश करता है। तो यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इनसिंक के दौरान समावेशन का सबसे बड़ा पल पेडलिंग नहीं था । सरचू में आसमान के तारों को गिनते समय, लटो में धूप सेंकते हुए ; शून्य से छह डिग्री कम के तापमान का सामना करते हुए, व्हिस्कीनाला में निर्देशित टॉयलेट ब्रेक लेने के लिए - इन हर रोज की घटनाओं में समावेशन के सबसे ताकतवर क्षण हैं, जब व्यक्ति अपना रोज़ का काम करते हुए अपने आसपास के लोगों का भी मदद करता है । यह अत्यधिक ठंढ और बर्फ में अपने तम्बू से बाहर निकलना और अपना काम करना सबके लिए मुश्किल काम है चाहे वे विकलांग हो या नहीं !

इन हर रोज की घटनाओं में समावेशन के सबसे ताकतवर क्षण हैं, जब व्यक्ति अपना रोज़ का काम करते हुए अपने आसपास के लोगों का भी मदद करता है ।

यह अहसास कि यह अभियान हर व्यक्ति के लिए चुनौतीपूर्ण है इस पूरे अनुभव के मूल में है। 15 वर्ष की उम्र से लेकर 69 वर्ष के प्रतिभागी इसमें भाग ले रहे थे। शिक्षक से लेकर अधिकारियों, प्रेरक वक्ताओं, पत्रकार और निर्माता जैसे कई व्यवसाय के लोग शामिल थे। दल में एबीबीएफ से, एक पूर्णकालिक चिकित्सक और फोटोग्राफर शामिल थे, जो समूह की सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार थे। दैनिक आधार पर अभिभूती और अंतर्दृष्टि के पल होते थे, क्योंकि हर व्यक्ति, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से विकास, आत्म-प्राप्ति और खोज की यात्रा पर था। मेरी कहानी कुछ अलग थी। लम्बी दूरी के सदस्य होने के कारण, मुझे भीतर से बाहरी व्यक्ति, होने का एक अद्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। मैंने सब से बात की थी लेकिन किसी से मिली नहीं। मेरे हाथ से पीछे की तरह एबीबीएफ के

लोकाचार को जानती थी, लेकिन अभी तक मैं उनके किसी भी बड़े कायक्रम की हिस्सा नहीं थी । मैं अजनबी न होते हुए भी अजनबी थी। मेरे लेखक मन ने मुझे एक कदम पीछे हटकर निरीक्षण करने का अवसर दिया, और समय के साथ, हमारे सामने प्रदर्शित सफलता का आनंद उठा सकी।

हर दर्रे को पार करने के बाद, एक अंधा साइकिल चालक और दृष्टिवाला एबीबीएफ दल के सदस्य की नाचते हुए तस्वीरों में, समावेशन का सच्चा अर्थ छिपा है। बातचीत के बीच में, दोस्त को तम्बू डंडे और रस्सियों के बीच मार्गदर्शन करने में, समावेशन का सही अर्थ है । ठंड में अंगों के फुलने से कृत्रिम अंगों को लगाने में जो कठिनाई हुई, इसके बारे में बातचीत करते, एक अंधे साइकिल चालक अपने तम्बू के बाहर कितने कदम उठा सकता है और किस दिशा में यह निर्देशन देने में , रातों में बिना किसी के सहायता के टॉयलेट-ब्रेक पर जाने के लिए निर्देशों में, बातचीत के बीच एक से अधिक फोन 'स्क्रीन पाठकों को सुनने में , इन सभी में समावेशन का सही अर्थ है । सिसू में, तंबू के कोने में बैठे मैंने इन लोगों को -जो कुछ दिन पहले तक मेरे लिए अजनाबी थे- 1980 के हिट हिंदी फिल्मों के गानों पर नृत्य करते देखा। माँ-बेटी, पति-पत्नी, दोस्त, मस्ती से झूम और नाच रहे थे। कुछ लोग अंधे थे और बाकि लोग देख सकते थे, कुछ लोग अपंग थे, कुछ लोग नहीं। उन पहाड़ियों में, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार और लता मंगेशकर के आवाजों के बीच, इन सब बातें का कोई मान्यता नहीं रहा । उन स्वरों और हंसी में समावेशन का सच्चा अर्थ है । ■

यह अहसास कि यह अभियान हर व्यक्ति के लिए चुनौतीपूर्ण है इस पूरे अनुभव के मूल में है।

खेलते हुए सीखो

कभी-कभी, हम बच्चे के खेल से जीवन के महत्वपूर्ण सबक सीखते हैं, मीना भट्ट पता लगाती है

मीना भट्ट

एक उज्ज्वल सुबह, मिनाली, नीना, मोनिका, रीटा, और रेखा कंकड़ के साथ खेल रहे थे। मिनाली ने जल्द ही अपने दोस्तों को अलविदा कहा। बहुत सारी तैयारी करने के लिए उसे जल्दी घर वापस जाना था। 15 दिनों में गुड्डी की शादी थी। गुड्डी मिनाली की प्यारी गुड़िया थी। और जानते हो कि दूल्हा कौन था? नीना का 'गुड्डा'। लड़कियों ने अपने समाप्ति परीक्षा के एक दिन बाद शादी समारोह की योजना बनाई थी। यद्यपि दोनों इसके बारे में उत्साहित थे, लेकिन नीना चिंतारहित थी, क्योंकि उसे कुछ भी काम नहीं करना था। परंपरा के अनुसार, शादी की सभी तैयारी दुल्हन के परिवार को करना था । मिनाली को सब कुछ करना था ... शादी के कार्ड बनाना, गुड्डी और गुड्डा के लिए कपड़ों की सिलाई, भोजन का मेनू तैयार करना, मंडप की तैयारी और शादी को सम्पन्न करने के लिए पंडित को बुलाना। मिनाली ने यह सब शांत मन के साथ किया और शादी के दिन वह अपने मेहमानों का स्वागत करने के लिए तैयार थीं।

उसके आंगन का उद्यान सुंदर फूलों से सजा था। उसने मंडप बनाने के लिए अपनी

मां की लेस साड़ियों का इस्तेमाल किया था। फूलों, साड़ियों और तोरनों से अच्छी तरह से सजा वह जगह देखने में अद्भुत था। एक छोटा कैसेट प्लेयर से बज रही शहनाई के संगीत ने माहौल को और अनोखा बना दिया। हवा उत्साह से भरा था, लेकिन मिनाली को चिंता और दुःख की भावना ने घेर लिया । अचानक, वह यह सोचकर दुखी हो गयी कि गुड्डी घर छोड़ रही है । मिनाली को छोटे उम्र से ही पता थाकि बड़े होने के बाद लड़कियों को एक अन्य परिवार के साथ रहना पड़ता है । इसके बाद उन्हें उस परिवार में गुल-मिल जाना है और खुद को उस परिवार का एक अंग बनाना पड़ता है। उनके गुड़िया गुड्डी के साथ भी यही होना था । एक पल के लिए, उसे इस तरह के योजना बनाने पर गुनाह महसूस हुआ, जहां सभी धूमधाम के बाद, उसे अपने जीवन का सबसे प्रिय हिस्सा किसी और को देना पड़ा। बहुत प्रयत्न करने के बावजूद, वह अपनी प्यारी गुड़िया को विदा करते वक्त आँसू को रोक नहीं पायी ।

दिन बीत गए और जल्द ही एक महीना हो गया । एक दिन मिनाली नीना के घर गई , और वहां अपने गुड़िया को घर के एक कोने में पड़ा देखकर चौंक गई । दोनों दोस्तों के बीच बहस हुआ । नीना ने उसके गुड़िया को 'विकलांग गुड़िया' कहा क्योंकि उसका केवल एक ही पैर थी। मिनाली अपनी गुड़िया के साथ हुए खराब व्यवहार को बर्दाश्त नहीं कर पाई। और इसके लिए वह अपने सहेली को माफ़ नहीं कर सकी। ऐसा क्यों हुआ? गुड़िया की खातिर मिनाली और नीना में इतनी बड़ी लड़ाई क्यों हुई ? या क्या गुड्डी उसके लिए केवल एक गुड़िया थी ...?

मिनाली के लिए तो गुड्डी एक बेटी से ज्यादा थी। उन दिनों में, उनकी उम्र की लड़कियां गुड़िया से खेला करती थीं और खुद को एक माँ की भूमिका में पेश करती थीं। मिनाली को भी उसकी बड़ी बहन से एक गुड़िया मिली थी। जिस दिन से उसे गुड़िया मिली, मिनाली ने उसके साथ एक अनूठा संबंध विकसित किया। वह सिर्फ एक गुड़िया नहीं थी बल्कि 'गुड्डी', उसकी प्यारी बच्ची। मिनाली उसके लिए अथक काम करती थी। हर दिन वह स्कूल से लौटते ही, स्कूल-बैग को अलमारी में रखकर, दोपहर का खाना खत्म करने के बाद जब उसकी मां थोड़ा आराम कर रही होती मिनाली, गुड्डी के लिए एक सुन्दर घर बनाने के लिए, बरामदे की ओर दौड़ पड़ती। गुड़िया का घर उन दिनों में उपलब्ध सभी सुविधाओं से सुसज्जित था। यह सब मिनाली द्वारा न केवल डिज़ाइन किया गया था बल्कि उसने खुद बनाया था, और इसलिए उसे बहुत आनंद मिला।

गुड़िया खूबसूरत, गोरी, नीले आँखों और गलफुला गालों वाली थी। वह खुशी की एक पोटली थी।

मिनाली उसे इतना प्यार करती थी कि उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ा कि उसकी गुड़िया का एक पैर नहीं था। इस निविदा उम्र में, मिनाली अपनी गुड़िया की देखभाल करने वाली माँ बन गई। कभी-कभी, उसके कुछ दोस्त गुड़िया का मज़ाक उड़ाते थे , और अन्य उसे अपनी गुड़िया को बदलने की सलाह देते थे। लेकिन, मिनाली के लिए, यह मैत्री और बिना शर्त प्रेम के बारे में था। मिनाली ने उसके साथ मिलकर चुप्पी और एकजुटता के कई क्षण बिताये थे। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसकी गुड़िया में क्या कमी थी।

मिनाली जल्द ही एक जवान और खूबसूरत युवती बनी। उसके माता-पिता ने उसके लिए एक वर ढूंढ निकला और उसकी शादी करवा दिया । एक बार फिर, ऐसा लगा कि उसके भाग्य में कुछ और लिखा था। शादी के दो साल बाद, उसने खुशी की पोटली को जन्म दिया। उसके परिवार के सदस्य अपने परिवार में एक बच्चे का स्वागत करते हुए बहुत खुश थे। मिनाली, हमेशा की तरह, अपने छोटे बेटे के लिए सबसे अच्छी माँ बनना चाहती थी। वह अपने बच्चे को प्यार करने, दुलार करने और उसके लिए लोरी गाने में खुश थीं।

दिन बीत गए और उसके बेटे को बड़े होते देख वह खुश थी। मिनाली के लिए , उसका बेटा 'राजा' था। जब तक छोटा राजा अपना पहला कदम उठाने के लिए संघर्ष नहीं कर रहा था, सबकुछ ठीक लग रहा था। मिनाली आशा कर रही थी कि उसके बेटे के साथ कुछ गलत न हो । लेकिन ऐसा नहीं होना था। उसे जल्द ही एहसास हुआ कि राजा अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह बड़बड़ा नहीं रहा है । मिनाली के अंतर्ज्ञान ने उसे डॉक्टर से परामर्श करने के लिए मजबूर किया। परीक्षण के परिणाम ने उसके दुनिया को पलट दिया । उसके बच्चे के बारे में डॉक्टरों ने जो कहा उस पर वह विश्वास नहीं कर पायी।

राजा को एक असामान्य विकलांगता का निदान हुआ जो उसे अपने जीवन में बहुत कुछ करने से रोकेगा। उसे चलने और बात करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। मिनाली गहरी दुःख में डूब गई। उसके पति अपने दुःख पर काबू पाने के लिए काम पर अधिक घंटे खर्च करने लगे। मिनाली - अपने भाग्य के बारे में अज्ञात, निविदा मुस्कराहट देते - अपने बेटे को प्यार से घूर रही थी। मिनाली ने गुड्डी और उसके साथ बिताए दिनों को याद करने लगी । मिनाली ने अपने ही मन में सोचा "अच्छा, शायद यह इस दिन के लिए था कि भगवान ने मुझे बहुत समय पहले तैयार किया"। उसने अपने मन ही मन में ठान लिया कि जब तक वह डॉक्टरों को गलत साबित नहीं करेगी, तब तक वह आराम नहीं करेगी। समाज के द्वारा अपने बेटे पर लगाए गए

सभी वर्जनाओं का सामना करने के लिए उसे तैयार करने के लिए उसने 'गुड्डी' को धन्यवाद किया। उसने सभी राय - जो, हर आगंतुक उसके राजा के बारे में दे रहे थे - की उपेक्षा की । उसके लिए तो , वह हर गर्वित माता पिता के बच्चे की तरह, एक बच्चा था।

दिन - ब - दिन मिनाली उसके लिए काम करती थी। उसने उसके चुनौतियों, चिकित्सा प्रणालियों और चिकित्सीय हस्तक्षेपों पर अनुसंधान किया। उनके पति और परिवार ने भी इन प्रयासों में योगदान दिया और उसके हर कदम का समर्थन किया। राजा को अन्य विकलांगता के साथ आटिज्म भी था। उन्होंने बहुत देरी से ही चलना शुरू किया और मौखिक संचार में कई चुनौतियों का सामना किया। फिर भी, मिनाली, आशा से भरी, उससे अथक बात करती रही। वह उसे यह कहती रही कि किसी भी अन्य बच्चे की तरहवह महत्वपूर्ण है। वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि जैसे बाकी बच्चों को परीक्षा में उनके अंक के लिए आलोचना और सराहना की जाती है, राजा अपने जीवन के हर एक दिन परीक्षा का प्रयास कर रहा है और अपने अद्भुत परिणामों से सबको आश्चर्यचकित कर दिया । चाहे 25 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीतना हो या आईसीटी के मदद से बनाया गया अद्भुत डिजिटल चित्रकारी हो , उसकी उपलब्धियां तथाकथित "मुख्यधारा" से अनदेखी की जाती थी, लेकिन मिनाली और उनके परिवार के लिए यह एक जीत थी ... उन सभी प्रयासों का - जो उन्होंने समाज के हकदार प्रशंसा प्राप्त करने के लिए लगाया - आनन्दपूर्ण परिणाम था।

इस कठिन यात्रा ने भी मिनाली को कुछ महत्वपूर्ण जीवन सबक सिखाई और उसे सकारात्मक सोच की शक्ति के साथ सशक्त बनाया। मिनाली ने अपने जीवन में माँ के रूप में अपनी वृद्धि की सफलता के लिए दो महत्वपूर्ण लोगों की योगदान की सराहना की - उनके बचपन की गुड़िया ' गुड्डी' और राजा। दिन - ब - दिन मिनाली अपने प्रिय पुत्र को एक महत्वपूर्ण संदेश के साथ गले लगाती ... "मुझे खुशी है कि तुम मेरे हो।"

यह मीना भट्ट , एक आटिज्म वाले बच्चे की माँ, की वास्तविक जीवन की कहानी है।■

समाज के द्वारा अपने बेटे पर लगाए गए सभी वर्जनाओं का सामना करने के लिए उसे तैयार करने के लिए उसने 'गुड्डी' को धन्यवाद किया। उसने सभी राय - जो, हर आगंतुक उसके राजा के बारे में दे रहे थे - की उपेक्षा की ।